# ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्मा की तीन कविताएं

अनुवादक: सूर्जलेखा ब्रह्मा

## (1)

## बोधिद्रुम से बढ़कर

मैं जैसे ही इस धरती पर आया
मुझे बर्फ की ठंडी दुलार महसूस हुई ;
एक अनदेखे हाथों का
कब्रिस्तान, नंगे धड़ और आकाश में गिद्धों की उड़ान देख
न जाने क्यों मैं काँप उठता हूँ।

यह शरीर खून-पसीना बहाता है
जी भर कर लड़ता है
एकांत जीवन की सीमाओं को बनाए रखने के लिए।

मैं पुरानी सड़कों को फिर से पिरोना चाहता हूँ
वही सड़क
जिस सड़क से सिद्धार्थ चलकर आए थे,
अपनी दोनों आँखों में एक स्वतंत्र यात्री का चिह्न पहने हुए
भूख-प्यास के साथ
मन में कई प्रश्न लेकर
अपने भौतिक जीवन से परे
क्या जन्म से भी अधिक कोई है प्यारी वस्तु?
मैं प्रेम, त्याग और घृणा से
इस दुनिया को जाँचकर
बैठ जाता हूँ बैचेन मन से
बोधिद्रुम[1] की छाया में;
जहाँ एक अनजाने तारे की किरण पहुँच प्रकाशित करती है कि
यह अंत नहीं है
मेरी यात्रा स्तंभ है

[1]बोधिद्रुम अर्थात जिस पेड़ के नीचे बैठकर गौतम बुद्ध ध्यान करते थे।

जीवन का लक्ष्य अभी प्राप्त नहीं हुआ है
एक अप्रत्याशित सितारा जिसका जन्म अभी नहीं हुआ है
वही है मेरा लक्ष्य।
स्वर्ग और नर्क
वर्तमान और भविष्य जन्म के असमंजस को तोड़
इन हाथों से मैं वर्तमान को मापना चाहता हूँ
वही है मेरा लक्ष्य।

**(2)**

**आसमान की तलाश में**

हमें आज एक आसमान की तलाश है।
हमें आज जरूरत है
ताजा और मुक्त हवा की
जहां सफलता के लिए
हमारी कोई सीमा नहीं होती।
खाली शरीर अब भर गया है,
भूखे मन में जहर का ख़याल आने लगा है।
इसीलिए आज
इतिहास खुद को याद कर रहा है,
वह अश्लील रूप
उसकी अलग सोच और परवरिश
अमर जीवन वृक्ष में विषैला फल।
उसकी सज़ा को
आखिर भूलाने का क्या उपाय है ?
उपनिषद्, बाइबल, कुरानों को
अपने ही पैरों तले कुचल
शुद्ध जल में भी अगर मैल जम जाय
दोषी किसे ठहराएँगे ?
क्रोधित मन से व्यक्ति की हत्या करने वाला
आज दुविधा में है।
आज़ादी और
सादगी मन से भरपूर
इधर से उधर उड़ान भरने वाली चिड़ियाँ
आज पिंजरे की सीमा में बंद है
इसीलिए आज हमें एक सम्पूर्ण आसमान की तलाश है।

**(3)**

## वे कलर ब्लाइंड हैं

(एक फूल की पंखुड़ी : शोभा ब्रह्मा के लिए)

शायद वे नहीं जानते
सफ़ेद से काला कितना अलग है।
क्योंकि वह कलर ब्लाइंड हैं
इसीलिए उन्हें इंद्रधनुष भी
पीला दिखाई पड़ता है।
जहां आप एल डोराडो[2] की असली तस्वीर पेश करना चाहते हैं,
वहाँ वह केवल तिरछी नज़रों से देख चले जाते हैं।
शायद इसीलिए
कला को कला के लिए कहा जाता है।
घर के पीछे कालीन घास पर प्रशांत महासागर की एक बूंद
हजारों लोगों के पैरों तले
अनगिनत 'विश्वब्रह्मांड'।
हिरोशिमा और नागासाकी की धूल में
जीवन की नई उन्माद के साथ
जब आप स्वर्ग की सृष्टि चाहते हैं,
मैं भी कहना चाहता हूँ-
'मैं मरना नहीं चाहता।'
लेकिन वे कलर ब्लाइंड हैं।
उन्होंने अभी तक अपने चेहरे से
अँधेरे का जाल नहीं हटाया है।

*(**लेखकीय परिचय:** बोड़ो साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्मा समकालीन बोड़ो कवियों में एक नामचीन हस्ताक्षर हैं। वर्ष 2015 में 'बाइदी गाब बाइदी देंखो' कविता संग्रह के लिए ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्मा को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। बोड़ो से हिंदी कविता का अनुवाद सूर्जलेखा ब्रह्मा द्वारा किया गया है, जो कि हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय की शोधार्थी हैं।)*

[2] एल डोराडो जो अपने को सोने का राजा कहता था और हर वर्ष सोने की पानी में लपेटकर नदी में डुबकी लगाता था।